श्रीमद्दयानन्द वेद
सन्दर्भ पुस्तकालय
खंडन मंडन ग्रन्थ माला संख्या क्रमांक 2879
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

❀ पुराणों के कृष्ण ❀

लेखक—
डा० श्रीराम आर्य

प्रकाशक—
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०)

दयानन्दाब्द १४०
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६५
सन् १९६४

चतुर्थवार
मूल्य ३१ न० पै०

* आद्य निवेदन *

इस पुस्तक को लिखने में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं थी। पर जब मि० माधवाचार्य जी की पुस्तक हमारे सामने आई और जनता में उसका उन्होंने प्रचार किया, तो यह देखकर कि किस प्रकार इस पौराणिक पंडित ने हमारे सीधे साधे सत्य विज्ञापन पर झूंठ का परदा डालकर हमको व ऋषि दयानन्द को गालियां दी हैं, और जनता को भ्रम में डाला है, हमें इच्छा न होते हुये भी पुराणों के आधार पर उसके पाखण्ड का भण्डा फोड़ करना पड़ा है। भगवान श्री कृष्ण जी महाराज सर्वथा-निष्कलङ्क थे। उनकी एक पत्नी रुक्मिणी थी व एक पुत्र प्रद्युम्न था। हम आर्य समाजी लोग उनको अपना व भारतीय राष्ट्र का महान आदर्श पूर्वज मानते हैं। उनका जन्म यादव कुल में हुआ था। बाल्यावस्था में गौ चराने का कार्य उन्होंने किया था। आज भी ग्रामों में लड़के लड़कियां (ग्वाले व ग्वालिनें) साथ २ गौ चराने का काम करते हैं पुराण बनाने वाले रसिक धूर्तों* ने कृष्ण को शृङ्गार रस का देवता (नायक) व उन ग्वालिन छोकरियों को शृङ्गार रस की नायका (गोपियां) बनकर पुराणों में गन्दी मिथ्या कथायें गढ़ गढ़ कर लिख मारी हैं। कृष्ण का गोपियों से अभिचार, रासलीला, कुब्जा समागम, एक फर्जी प्रेमिका राधा से गन्दा प्रेम इसी प्रकार की झूंठी कहानियां हैं। हमारा विश्वास है कि राधा नाम की कोई औरत कृष्ण के समय में नहीं हुई थीं। कामुक हृदय लोगों ने बहुत बाद को एक सुन्दरी नर्तकी राधा की कल्पना की और कृष्ण के साथ उसके प्रेम की

---

* देवी भागवत स्कन्ध ५ अध्याय १६ में पुराणकारों को 'धूर्त' बताया गया है।

कथा बनाली गई। इसलिए बाद के बने पुराणों में राधा का वर्णन मिलता है जो भागवत में नहीं है। 'न नौ मन तेल होय न राधा नाचे' यह प्रसिद्ध लौकोक्ति इस बात का समर्थन करती है कि शायद कभी कोई राधा नाम की प्रसिद्ध नर्तकी (डान्सर) रही होगी। उसके नाच में इतनी भीड़ इकट्ठी होती होगी कि मशालों में एक रात में मजलिस में रोशनी करने में ९ मन तेल जल जाता होगा। जैसा कि आजकल गायन में सुरैया व नरगिस मशहूर होरही हैं। राधा का नाम महात्मा कृष्ण के साथ जोड़ना उनको व्यभिचारी बताना है। यह पौराणिकों की घोर अज्ञानता है। इस पुस्तक को पढ़कर पाठक यह देखेंगे कि पुराणों में निष्कलङ्क कृष्ण को कैसे २ झूठे लांछन लगाये हैं। वे कलङ्क जबतक पुराणों का बहिष्कार नहीं किया जावेगा तब तक नहीं मिट सकते हैं, अतः हमारा निवेदन है कि हमारी हिंदू जाति पुराणों का पढ़ना सुनना-त्याग कर वैदिक साहित्य पढ़ना सीखे और अपने पूर्वजों के निष्कलङ्क चरित्रों एवं उनकी मान मर्यादा की रक्षा करने में अपना गौरव समझे। पौराणिक पंडितों से हमें कहना है कि वे समय के परिवर्तन को देखें और अपने विचारों में परिवर्तन करें। इन पुराणों के कारण आर्य धर्म की बड़ी बरबादी हुई है। इनका पाखंड अब ज्यादा दिन चलना नहीं है। इस पुस्तक को पढ़कर वे यह देखें कि भागवतादि पुराण कितने भ्रष्ट ग्रन्थ हैं। अतः उनका किसी भी रूप में वे प्रचार न करने का व्रत धारण करें।

कासगंज
ता० १-११-५६

डा० श्रीराम आर्य

❀ ॐ ❀

पौराणिक पंडित की गाली सभ्यता के चन्द नमूने

पृष्ठ — निष्कलङ्क कृष्ण पुस्तक में

२–कासगंजी दयानन्दी ने

४–निर्लज्ज दयानन्दी तो रांड़ 'निपूती' कहे बिना शांत होने वाले जन्तु नहीं हैं।

४–वेद शास्त्रानभिज्ञ मूसलचंद को सूझ सकता है।

४–फूटी आंखों देखने का अवसर मिला होता तो..... जन्म जात अंधता कथमपि दूर हो पाती।

७–नियोग से पैदा हुये दुष्ट हृदय दयानंदियों के कुत्सित मस्तक में नहीं समा सकते।

८–दयानंदियों का निराकार बाबा भी उनकी कन्या पाठशालाओं में उनसे नित्य सम्भोग करता होगा। ऐ नियोगियो! यदि अपने किये अनर्थ के परिणाम पर कुछ भी लज्जा हो तो वैतरणी में डूब मरो।

१२–अरे संस्कृतानभिज्ञमूढो! कुछ शर्म हो तो कर्मनाशा में डूब मरो।

१४–कासगंजी अंधे महाशय को

२१–दयानंद ने मनगढंत झूठी कथायें सत्यार्थप्रकाश के १२ वें समुल्लास में लिखकर सदा के लिये अपनी महा मूर्खता का अमर रिकार्ड संग्रह कर दिया।

नोट—इस प्रकार की घोर असभ्यता पूर्ण भाषा में पुस्तक लिखकर मूर्ख शिरोमणि माधवाचार्य ने हमको व आर्यसमाज के प्रवर्तक को अपशब्दों में संबोधित किया है।

अतः विवस होकर हमें भी प्रत्युत्तर में इस पुस्तक में कटु भाषा का विपक्षी के लिये प्रयोग करना पड़ा है।

कृष्ण के उज्वल चरित्र पर पुराणों के गंदे आक्षेप ?

प्रायः कुछ साल हुए, हमने वर्तमान कीर्तन प्रणाली दूषित है तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के नाम के साथ राधा का नाम जोड़ना ग़लत है, इस विषय पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया था। इतने लम्बे समय तक सोच विचार एवं तैयारी करने के बाद दिल्ली के प्रसिद्ध गाली गलौज शास्त्री पौराणिक पंडित माधवाचार्य ने निष्कलंक कृष्ण, नाम से उसका उत्तराभास प्रकाशित किया है। जवाब तो उनसे बन नहीं पड़ा है, कोरी गालियों की भरमार उनके लेख में की गई है। साथ ही जनता को भ्रम में डालने के लिए अपने मिथ्या पांडित्य के आधार पर विषय को टालने की कोशिश की गई है। हम माधवाचार्य की गालियों का उत्तर उसी रूप में देना उचित नहीं समझते हैं। पर 'शठे शाठ्यम्' के आधार पर उनका गर्व मर्दन अवश्य करेंगे पाठक इसके लिए हमें क्षमा करें।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण महाराज को महान् विद्वान, पूर्ण सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ, एवं सर्वथा निष्कलङ्क मानता है। ऐसे महापुरुष कभी व्यभिचारी, पर स्त्री गामी अथवा कुकर्मी नहीं हो सकते हैं। पर सनातन धर्म के पुराणों में श्री कृष्ण जी महाराज के पवित्र जीवन पर असंख्य गंदे एवं मिथ्या लांछन लगाए गए हैं। भागवत, ब्रह्मवैवर्त आदि पुराण ऐसे ही गंदे लांछनों से युक्त मिथ्या कहानियों से भरे पड़े हैं, जिन्हें देखकर प्रत्येक भारतीय सभ्यताभिमानी का सर लज्जा से झुक जाता है और विधर्मी हिंदू जाति को संसार में बदनाम करते हैं। हमने लिखा था कि ऐसे ग़लत पुराणादिकों को धर्म ग्रन्थ नहीं मानना चाहिए और उनका प्रकाशन बन्द कर देना चाहिए। पर हमारा

विचार हमारे विपक्षियों को पसंद नहीं आया और उन्होंने हमें गालियां से उत्तर दिया है जो कि पौराणिक असभ्यता का अभिन्न अङ्ग है। जिन्होंने माधवाचार्य की पुस्तक को देखा है वे हमारे उत्तर को पढ़कर देखेंगे कि किस क़दर यह पड़ित उत्तर देने में चारों खाने चित्त गिरा है।

* व्यभिचारी शिरोमणि कृष्ण *

हमने लिखा था कि गोपाल सहस्र नाम ग्रंथ में श्रीकृष्ण जी को चोर और व्यभिचारियों का शिरोमणि लिखा है। यथा— गोपाल कामिनी जारश्चौर जार शिखामणि है, (श्लोक१३७) इस पर विपक्षी ने लिखा है कि 'जार' शब्द का अर्थ हमने ग़लत किया है वास्तव में यहां जार शब्द का अर्थ 'व्यभिचारी' ही है पाठक सनातनी पंडितों का अर्थ जो बम्बई भूषण प्रेस मथुरा ने उक्त ग्रंथ की टीका में छापा है देखें– "(गोपाल कामनी जारः) गोपियों में प्रेम रखने से। (चोर जार शिखामणि) चोर और व्यभिचारियों में शिरोमणि होने से।" अर्थात् कृष्ण चोर और व्यभिचारियों के शिरोमणि थे। यह अर्थ हमारा या किसी आर्य समाजी का किया नहीं है, सनातनी पंडितों का है। वास्तव में यही अर्थ ठीक है। माधवाचार्य अपना सारा पाखण्ड फैलाकर भी इस अर्थ को मिथ्या नहीं कर सकता है। बकवास भले ही करता रहे। गोपाल किस प्रकार कामिनी जार थे यह भी पुराणों ने निम्न प्रकार स्पष्ट किया है।

* गोपियों से कृष्ण का विषय भोग करना *

ता वार्य माणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृभिस्तथा।
कृष्ण गोपांगना रात्रौ रमयंति रतिप्रियाः। ५६।
सोऽपिकैशोर कवयो मानयन्मधुसूदन।

रेमेताभि रमेयात्मा क्षपासु क्षपिता हितः ॥६०॥
(विष्णु पुराण अंश ५ अ० १३)

अर्थ—वे गोपियां अपने पति, पिता और भाइयां के रोकने पर भी नहीं रुकती थीं और रोज रात्रि को वे रति (विषय भोग) की इच्छा रखने वाली कृष्ण के साथ रमण (भोग) किया करती थीं ।५६। कृष्ण भी अपनी किशोर अवस्था का मान करते हुए रात्रि के समय उनके साथ रमण किया करते थे ॥ ६० ॥ कृष्ण गोपियों के साथ किस प्रकार रमण किया करते थे, इसके लिए स्पष्ट प्रमाण देखिए, जो पुराण रचने वाले धूर्तों ने कृष्ण को कलङ्कित करने को लिखे हैं।

एव परिष्वंग कराभिमर्श, स्निग्धे क्षणेदाम विलास हासैः।
रेमे रमेशो व्रज सुंदरीभि यथार्भकः स्व प्रतिबिम्ब विभ्रमः ।१७।

अर्थ-कृष्ण कभी उनका शरीर अपने हाथों से स्पर्श करते थे, कभी प्रेम भरी तिरछी चितवन से उनकी ओर देखते थे, कभी मस्त हो उनसे खुलकर हास विलास (मजाक) करते थे जिस प्रकार बालक तन्मय होकर अपनी परछांई से खेलता है, वैसे ही मस्त होकर कृष्ण ने उन व्रज सुंदरियों के साथ रमण, काम क्रीड़ा (विषय भोग) किया।

कृष्ण विक्रीडितं वीक्ष्य मुमुहुखेचर स्त्रियः।
कामार्दिताः शशांकश्च सगणो विस्मितोऽभवत् ।१६।
कृत्वा तावंतमात्मानं यवतीर्गोपयोषितः।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया । २० ।
तासांमति विहारेण श्रांतानां वदनानिसः।
प्रामृजत करुणः प्रेमणा शंतनेनांगपाणिना ।२१।
(भागवत स्क० १० अ० ३३)

अर्थ-कृष्ण के रासकी काम क्रीड़ा देखकर देवताओं की पत्नियां भी कामार्दित होगईं। विषय भोग की उग्र इच्छायें पैदा होजाने

मे उनके शरीर कामरस से अदित अर्थात् गीले होगये। चन्द्रमा तारों व ग्रहों के साथ चकित रह गया। कृष्ण ने जितनी गोपियां थीं उतने ही रूप रखकर उनके साथ हर प्रकार से रमण किया जब अति रमण करने से वे सब बहुत थक गईं (और उन्हें पसीना आगए) तो करुणा करके कृष्ण ने अपने कोमल हाथों से उन प्रेमिकाओं (गोपियों) से मुंह पोंछे।

नद्याः पुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिम वालुकम।
रेमे तत्तरलानन्द कुमुदामोद वायुना ॥ ४५ ॥
बाहु प्रसार परिरम्भकरालकोरु—
नीवीस्तनालभ ननर्मनखाग्रपातैः
क्ष्वेल्यावलोक हसितैर्व्रज सुन्दरीणा—
मुत्तम्भयन् रतिपतिं रमयांश्चकार ॥ ४६ ॥

(भागवत स्क० १० अ० २६)

अर्थ—कृष्ण ने जमुना के कपूर के समान चमकीली बालू के तट पर गोपियों के साथ प्रवेश किया। वह स्थान जलतरङ्गोंसे शीतल व कुमुदिनी की सुगंध से सुवासित था। वहां कृष्ण ने गोपियों (ग्वालिनों)के साथ रमण (भोग) किया। बाहें फैलाना, आलिंगन करना, गोपियों के हाथ दबाना, उनकी चोटी पकड़ना, जांघों पर हाथ फेरना, लँहगे का नारा खींचना, स्तन (पकड़ना) मज़ाक करना, नाखूनों से उनके अङ्गों को नोंच २ कर जख्मी करना, विनोद पूर्ण चितवन से देखना और मुस्कराना, तथा इन क्रियाओं के द्वारा नवयोवना गोपियों में कामदेव को खूब जागृत करके उनके साथ कृष्ण ने रात में रमण (विषय भोग) किया।

इसमें कामदेव को जागृत करके रमण करना स्पष्ट बताता है के रास की आड़ में विषय भोग किया जाता था।

* नृत्यन्ती गायती काचित् कूजन्नूपुर मेखला *

पार्श्वस्थाच्युत हस्ताब्जं श्रांताधात् स्तनयोः शिवम् ।
(भागवत् स्कंध १० अध्याय ३३ श्लोक १४)

अर्थ—कोई गोपी अपने नूपुर और करधनी के घुंघुरुओं को झनकारती हुई नाच और गा रही थी। वह बहुत थक गई, तब उसने अपनी ही बगल में खड़े श्यामसुन्दर कृष्ण के शीतल कर कमलों को अपने स्तनोंपर रख लिया। (अर्थात् छातियां मसकवा कर थकावट मिट वाली)।

यह सब क्यों होता था ? इसलिये कि 'तमेव परमात्मनै जार बुद्धियापि सङ्गता'(भागवत् स्कन्ध १० अ० २९ श्लोक ११)

अर्थात्—यह बात नहीं कि रति युद्ध विशारद कृष्ण का ही गोपियों में ऐसा भाव रहता हो, बरन् गोपियों का भी कृष्ण में व्यभिचार भाव रहता था। इसके लिये ज़रा और स्पष्ट प्रमाण देखिये—

वर्तमान पौराणिक सनातन धर्म में राम व कृष्ण, विष्णु के अवतार माने गये हैं। विष्णु का अवतार ही इस पृथ्वी पर व्यभिचार करने के लिए होता है। कृष्ण के रूप में विष्णु केवल अपनी व्यभिचार भावना को पूरी करने को आया था। यह बात निम्न प्रमाण से स्पष्ट है।

* महा व्यभिचारी विष्णु के अवतारों का रहस्य *

भ्रातृणां दैत्य मुख्यानां हतानां दारुणे युधि ।
स्त्रियो हृत्वा तु पाताले चिक्रीड़ च मुमोद च ॥
त्रेतायुगे रामरूपि विष्णु सम्प्राप्य जानकी ।
नो तृप्तः स्त्री बिलसानां वित्तस्य च सुतस्य च ॥

रेतः संप्रेषणाश्चापि प्रोषितस्य स्त्रियामपि ।
तस्मात् कलियुगे भूमौ ग्रहीत्वां जन्म केशव ।।
वासुदेवस्य देवक्या मथुरायां महाबलः ।
बालस्तु गोप कन्याभिर्वने क्रीड़ा चकार स ।।
दश लक्षाणि पुत्राणां गौपालानां ससर्ज ह ।
ततस्तु योवना क्रांतो रुक्मिणी प्रददर्श ह ।।
विवाहयित्वा पुत्रांश्च प्रद्युम्ना दद्याश्च निर्यमे ।
तथापि नरकं दैत्यं प्राग्ज्योतिषमतिं बलात् ।।
हृत्वा स्त्रीणां सहस्राणि षोडशैव जहार सः ।
तासां रति फलं भुक्त्वा पुत्राणां नवतिं तथा ।।
सहस्राणि ससर्जासु मत्स्ये चादै महाद्भुतं ।
स्त्रीणां तथापि नो तृप्तो दिव्यांनां तुरेतेर्यदा ।।
तथा राधा स्त्रियं काचिन्न धैर्या दधर्षयत् ।
तथापि परनारीणां लम्पटो नित्यमेवहि ।।
(शिवपुराण धर्म संहिता अ० १०)

अर्थ—भगवान विष्णु राक्षसों को मारकर उनकी स्त्रियों को पाताल में लेगया तथा उनके साथ क्रीड़ा करता व मजे मारता रहा। त्रेता युग में राम जन्म लेकर जानकी से विवाह किया। किंतु स्त्रियों के विलास से तृप्त नहीं हुआ और बन में जाने के कारण गर्भाधान भी यथेष्ट नहीं कर सका। इसलिए कलियुग के आरम्भ में कृष्ण अवतार धारण किया और बालकपन में गोपियों (ग्वालिनों) से क्रीड़ा (भोग) करके दस लाख लड़के पैदा कर डाले। तब भी स्त्री भोगों से तृप्ति नहीं हुई तो युवा अवस्था में रुक्मिणी से शादी करके प्रद्युम्न आदि सन्तानें पैदा कीं। (तब भी तृप्त न हुये तो) प्राग्ज्योतिष के राजा नरक को मारकर सोलह हजार औरतें लाये और उनसे भोग करके ९० हजार लड़के पैदा कर डाले। फिर भी तृप्ति न हुई तो राधा नाम

की एक औरत को पकड़ लाये। इतना स्त्री भोग को भोगने पर भी भगवान नित्य ही पर नारियों के लम्पट हैं।

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि पुराणों के अनुसार विष्णु का अवतार कृष्ण केवल बहुत औरतों से व्यभिचार करने के लिये ही हुआ था। गोपियों से रातों में क्रीड़ा करना, उनकी छातियां मरोड़ना, उनके लँहगों के नारे खोलना, उनमें कामदेव को जाग्रत करके उनके साथ भोग करना और दसलाख लड़के उन ग्वालिनों से बन में पंदा कर देना, १६००० औरतें बदमाशी के लिये पकड़ लाना और विषय भोग द्वारा ६० हजार लड़के उनसे पैदा कर डालना क्या मानी रखता है? क्रोड़ा, बिहार लम्पट रति फल आदि शब्दों का अर्थ यहां स्पष्ट रूप से केवल विषय भोग करना ही है, कृष्ण का विशेषण 'जार शिखामणि' अर्थात् व्यभिचारियों के शिरोमणि पुराणों के रहते सौ फीसदी सत्य है। माधवाचार्य तो विचारा है किस गिनती में, भारत के सारे पौराणिक पंडित मिलकर भी इसका और कुछ अर्थ नहीं कर सकतेहैं। यह हमारा दावा है।

भागवत-गीता अध्याय १८ में श्रीकृष्ण को योगेश्वर बताती है तो सनातनी धर्म ग्रन्थ पुराण उनको भोगेश्वर सिद्ध करने की कोशिश करतेहैं, धिक्कारहै हजार बार ऐसे गंदे सनातनधर्मको।

पाठकों ने ऊपर देखा है कि सनातन धर्म में अवतार विष्णु के होते हैं और वह भी व्यभिचार की भावना से होते हैं। मानव कल्याण की भावना उनकी नहीं होती है। यह बात शिवपुराण के प्रमाण से स्पष्ट होचुकी है। यह विष्णु कहां रहता है यह भी हम आपको बताते हैं।

* विष्णु के निवास स्थान का पता *

इस पृथ्वी से सोलह करोड़ योजन ऊपर आकाश में विष्णुलोक

है, जिसमें विष्णु और उसकी पत्नी लक्ष्मी निवास करते हैं। (संक्षिप्त स्कन्द पुराण पृष्ठ ५७९ गीता प्रेस) इस से पता चला कि यह देवता भी हमारे लिए सर्वथा विदेशी है, जो यहां से १६ करोड़ योजन अर्थात् यहां से ६४ करोड़ कोस यानी प्रायः १ अरब ८८ करोड़ मील ऊपर कहीं आकाश में निवास करताहै। खेद है। कि भारत के हिंदुओं के दिमाग भी विदेशियोंकी गुलामी में फंसे हैं। इन्हें सर्व व्यापक परमात्मा पर कभी विश्वास नहीं रहा हमारा देश तो विदेशी गुलामी से आजाद होगया यदि यहां के लोगों के दिमाग भी परदेशी देवताओं की गुलामी, से मुक्त हो जावें, तथा विष्णु व शिव मन्दिर जो विदेशियों की बौद्धिक गुलामी के देश में अपमान जनक चिन्ह हैं मिट जावें तो देश वास्तव में पूर्ण स्वतंत्र हो जावे।

श्री कृष्ण जी के बारे ने पुराणों ने गोलोक की घटना लिखी है, और बताया है कि उनके अवतार लेने का कारण भी लोक कल्याण नहीं था। एक दिन गौलोक में राधिका जी ने उन्हें किसी दूसरी औरत से कुकर्म करते पकड़ लिया तो उन्होंने शाप दे डाला वे बोलीं—

* राधा का कृष्ण को शाप *

हे कृष्ण बृजाकांत ! गच्छ मत्पुरतो हरे।
कथं दुनोषिमां लोलं रति चौर अति लम्पट ॥ ५८ ॥
मया ज्ञातोऽसि भद्र ते गच्छ २ ममाश्रमात् ॥ ६० ॥
शाश्वते मनुष्याणां च व्यवहारस्य लम्पट।
लभतां मानुषो योनि गौलोकाद् ब्रज भारतम् ॥ ६१ ॥
हे सुशीले, हे शशिकले, हे पद्मावति, माधवी।
निवार्य ताञ्चधूर्तोऽयं किमस्यात्र प्रयोजनम् ॥ ६२ ॥

(ब्रह्म वैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड अ० ३)

अर्थात्—हे कृष्ण ब्रजा के प्यारे, तू मेरे सामने से चला जा तू मुझे क्यों दुःख देता है, हे चंचल, हे अति लम्पट कामचोर। मैंने तुझे जान लिया है। तू मेरे घर से चला जा। तू मनुष्यों की भांति मैथुन करने में लम्पट है, तुझे मनुष्यों की योनि मिले तू गौ लोक से भारत में चला जा। हे सुशीले, हे शशिकले, हे पद्मावति, हे माधवी! यह कृष्ण धूर्त है, इसे निकाल बाहर करो, इसका यहां कोई काम नहीं।-

इस प्रकार कृष्ण की गौलोक की पत्नी राधा ने कृष्ण को व्यभिचार में पकड़ कर शाप देकर औरतों से धक्के लगवाकर वहां से निकाल बाहर किया और व्यभिचार कामना पूरी करने का शाप देकर भारत में जन्म दिलाया। यहां आकर भी इन पौराणिक हज़रतने वही कुकर्म किये जिसके लिये यह यहां आयेथे

सनातनियो! देखो अपने भगवान के चरित्र! क्या अब भी राधेकृष्ण रटने से तुम्हारी मुक्ति होगी? अक्ल से सोचो। ऐसा चरित्र हीन व्यक्ति जिस भक्त के घर में जावेगा वहां पहिले व्यभिचार का सामान ही ढूंढ़ेगा।

इस १११ नम्बर के तिलकधारी पाखंडी पंडित ने 'रमण' शब्द के अर्थ पर भारी चिल्ल पुकार मचाई है। इसलिए आगे के प्रमाणों का अर्थ ध्यान पूर्वक पाठक देखें कि रमण शब्द का अर्थ विषय भोग है या कुछ और।

* कलियुगी पंडितों का रमण करना *

नारद कहते हैं कि—

पंडितास्तु कलत्रेण रमंते महिषाइव।
पुत्रस्योत्पादने दक्षा अदक्षा मुक्ति साधने॥

(भागवत अ० १ श्लोक ७५)

अर्थ-कलियुग के पौराणिक पंडित औरतों से भैंसे के समान

रमण करते हैं। वे केवल लड़के पैदा करने में ही कुशल होते हैं। धर्म कर्म व मोक्ष साधनों के बारे में वे खाक नहीं जानते।

भेंसा भेंस के साथ जिस प्रकार सूंघ २ कर अंधाधुन्ध रमण (भोग) करता है ठीक वैसे ही माधवाचार्य आदि सनातनी पोप पंडित स्त्रियों से केवल रमण करने में कुशल होते हैं यह शब्द हमारे या किसी अन्य आर्यसमाजी के कहे हुए नहीं हैं। सनातनी पंडितों पर नारद बाबा का फ़तवा अवश्य सत्य होगा। यहां पर रमण का अर्थ केवल 'विषय भोग' करना है। यह स्पष्ट है। फिर चाहे रमण भेंसे की तरह किया जावे या महादेव और सती की तरह अथवा कृष्ण और कुब्जा की तरह।

* महादेव और सती के रमण का प्रकार *

रेमे न शेके त सोढु सती श्रान्ताभवत्तदा।
उवाच दीनयावाचा देव देव जगत्गुरुम् ॥
भगवन्नहि शंक्नोमि तव भार सुदुः सहम्।
क्षमस्वमां महादेवः कृपां कुरु जगत्पते ॥
निशम्य वचनं तस्या भगवान् वृषभध्वजः।
निर्भरं रमणं चक्रे गाढ़ निर्दय मानसः ॥
कृत्वा सम्पूर्ण रमणं सतीं च त्यक्त मैथुना।
उत्थानाय मनश्चक्रे उभयौस्तेजः उत्तमम् ॥
पपात धरणी पृष्ठे तैं व्यरप्त अखिलं जगत्।
पातालेभूतलेस्वर्गे च शिवलिंगास्तदाभवन् ॥

(शब्द कल्पद्रुम कोष 'लिंग' शब्द की व्याख्या)

अर्थ—शादी के बाद एक दिन मस्ती में आकर शिवजी नव-वधू सती से 'रमण' करने लगे तो सती थक गई और महादेव जी के बोझ को न सह सकी, और बड़ी दीन वाणी में बोली। हे

जगद् गुरु ! आपके दुःसह भार को मैं नहीं सह सकती हूं। मुझे बस आप क्षमा करो। हे जगतपते ! मेरे ऊपर दया करो। तब महादेव जी ने यह सुनकर बड़ी निर्दयता से खूब मैथुन (रमण) किया। सम्पूर्ण मैथुन कर चुकने पर छोड़ी हुई सती ने उठने की इच्छा की। तब दोनों का उत्तम वीर्य पृथ्वी पर गिर पड़ा वीर्य से सारा जगत व्याप्त होगया। उस वीर्य से पृथ्वी स्वर्ग और पाताल तीनों लोकों में योनियों समेत शिवलिंग पैदा होगये।" महादेवजी ने किस प्रकार रमण किया, रमण शब्द का क्या अर्थ होता है, यह पाठकों ने ऊपर देखा। अतः 'रमण' शब्द का अर्थ पुराणों में जहां कृष्ण के राधा व गोपियों के साथ आया है, वहां विषय भोग ही अर्थ होगा। जहां योगी अथवा भक्त व ईश्वर के सम्बन्ध के अर्थ में आता है, वहां भक्त या योगी का ईश्वर के ध्यान में तन्मय (मग्न) होने के अर्थ में आता है। पर जिसके हिये की भी फूट चुकी हों ऐसे १११ नम्बरी पाखंडी की समझ में कैसे आवे, जिसकी खोपड़ी में मिथ्यार्थ भरा हुआहै वह सत्यार्थ को कैसे समझ सकताहै जो केवल भेंसे की तरह दिन रात स्त्रियां से रमण करना ही जानता हो ऐसा ढोंगी पंडित हम से 'रमण' का अर्थ पूंछे तो यह संसार का ८ वां आश्चर्य होगा।

पुराणों के अनुसार 'कामशास्त्र विशेषज्ञ' कृष्ण गोपियों के साथ किस प्रकार का रमण करते थे, इसको खुलासा करने के लिये भागवतकार ने लिखाहै "रेमे रमेशे व्रज सुंदरीभिः" अर्थात् कृष्ण उन प्रेयसी व्रज सुंदरियों के साथ विषय भोग (रमण) किया करते थे। गीता के श्रीकृष्ण जी ने जीवन में कभी व्यभिचार नहीं किया। पर पाखंडी पोप पंडितों को इसी में बडा मजा आता है कि निष्कलङ्क कृष्ण को व्यभिचारी बताया जावें, और उस आड़ में स्वयं खूब कुकर्म किये जावें।

* कुब्जा के साथ कृष्ण का व्यभिचार *

निद्रांचलेभे सा कुब्जा निद्रेशोऽपि ययौ मुदा।
बोधया मास तां कृष्णो न दासीश्चापि निद्रिताः ॥
त्यज निद्रां महा भागे शृङ्गारं देहि सुन्दरि ।
इत्युक्त्वा श्री निवासश्च कृत्वा तामेव वक्षसि ॥
नग्नां चकार शृङ्गार चुम्बनं चापि कामुकीम् ।
सा सस्मिता च श्रीकृष्ण नव सङ्गम लज्जिता ॥
चुचुम्ब गंडे क्रोड़े तां चकार कमलां यथा ।
सुरते विरतिर्नास्ति दम्पति रति पण्डितौ ॥
नाना प्रकार सुरतं बभूवतज्ञ नारद ।
स्तन श्रोणि युग्मं तस्या विक्षतंच चकारहः ॥
भगवान्नखैरग्रतीक्ष्णैः दशनैरधरं वरम् ।
निशावसान समये वीर्याधानं चकार सः ॥
सुख संभोग भोगेन मूर्छामाप च सुन्दरी ।
भगवानापितत्रैव क्षणं स्थित्वा स्वमंदिरम् ।
जगाम यत्र नन्दनश्च सानन्दौ नन्द नंदनः ॥
(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड ७२)

अर्थ—वह कुब्जा सोगई, और निद्रा के स्वामी कृष्ण भी वहां प्रसन्नता से गये। श्रीकृष्ण ने कुब्जा को जगा लिया। सोई हुई दासियों को नहीं जगाया। कृष्ण बोले, हे महा भाग्यशाली! अपने शृङ्गार को दानकर। यह कहकर कृष्ण ने कुब्जा को गोद में लेकर चुम्बन किया, और उस कामुकी को नङ्गा करके भोग करना प्रारम्भ कर दिया। वह समागम से लज्जित हुई मुस्कराकर कृष्ण को नङ्गा करके चुम्बन करने लगी, तब कृष्ण ने उसके कपोल चूमकर लक्ष्मी की भांति गोद में ले लिया। क्योंकि दोनों का जोड़ा काम भोग करने में चतुर था, इसलिए काम भोग का

अंत ही न आता था। हे नारद! वहां नाना प्रकार से काम भोग किया गया। भगवान कृष्ण ने उसके स्तनों को नाखूनों से जख्मी कर दिया और दांतों से उसके ओठों को काट खाया। उस रात कृष्ण ने आखीर में वीर्यधान कर दिया। सुख सम्भोग से वह सुन्दरी मूर्छित होगई। भगवान कृष्ण भी वहां थोड़ी देर ठहरकर अपने मकान को चले गये, जहां नन्द सानंद ठहरे हुये थे।

पाठक देखें सनातनी कृष्ण अवतार का चरित्र। पुराणों ने कृष्ण व्यभिचारी शिरोमणि होने में अब भी कोई संदेह है। पाखण्डी शिरोमणि गाली गलौज शास्त्री माधवाचार्य अब बतावें कि कुब्जा को ठोड़ी पकड़ कर उसका कुबड़ापन मिटाया जारहा है, या स्तन दाब दाब कर व उसे नङ्गा करके व्यभिचार किया जारहा है? अरे निर्लज्ज पोपो! यदि जरा भी शर्मो हया बाकी हो तो डूब मरो चुल्लू भर पानी में। तुमने भगवान कृष्ण को बड़ा कलङ्कित किया है।

कृष्ण के तीस करोड़ स्त्रियां थीं, यह "त्रिंशत्कोटि च गोपीनां गृहीत्वा भर्तुराज्ञया" ब्रह्मवैवर्त पुराण उत्तरार्ध अ० ११५ श्लोक ८७ में साफ लिखा है। यदि उल्लू को दिन में भी न दीखे तो सूर्य का क्या दोष है। मालुम होता है कि हजरत माधवाचार्य ने ब्रह्मवैवर्त पुराण की शक्ल भी नहीं देखी है। यदि पढ़ा होता तो यह प्रमाण उसे पुराण में मिल जाता विचारा वैसेही १११ का तिलक लगाकर ढोंग बनाकर पाखण्डाचार्य बन बैठा है। कुब्जा की कथा को देकर हमने माधवाचार्य के उस झूंठा का पर्दा फास किया है जो उसने लिखा था कि कुब्जा का कोई दुराचार का सम्बन्ध नहीं था। कृष्णने डाक्टरी करके ठोड़ी पकड़ कर झटका मारकर कुब्जा का कुबड़ापन दूर किया था। अब राधा कौन थी, इस प्रश्न पर हम उसके पाखण्ड का निराकरण

करते हैं। हमने विज्ञापन में ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रमाण से यह सिद्ध किया था कि राधा कृष्ण के बामाङ्ग से पैदा होने से कृष्ण की पुत्री थी, रायण से विवाह होने से वह कृष्ण की पुत्र वधू थी। क्योंकि रायण गौलोक में कृष्ण के अंश से पैदा होने से उन का उस रिश्ते में पुत्र था। रायण कृष्ण की माता यशोदा का भाई होने से कृष्ण का मामा लगता था। अतः इस रिश्ते से राधा कृष्ण की मामी हुई। इस हमारे लेख पर माधवाचार्य का दिमाग चक्कर खाने लगा। उन्मत्त की तरह आप प्रलाप करते हुये सफाई देने बैठे, और अपनी पुस्तक में पृष्ठ १६ पर हमारे प्रमाणों को स्वीकार करते हुए आपने लिखा कि असली राधा गायब हो गई और छाया रूप राधा को छोड़ गई। उसकी रायण से शादी हुई। इस पागलपन की बात का कोई उस जैसा बुद्धि हीन ही मान सकताहै, जो राधा गायब होगई उसकी व छाया रूप राधा की आत्मा एक थी या पृथक २ था? यदि एक थी तो आत्मा के दो टुकड़े होना गीता व कोई शास्त्र नहीं मानता है। यदि पृथक२ थी तो यह कहना मूर्खता की बातहै कि नई राधा पुरानी राधा की छाया थी! पता नहीं सनातनी पंडितों ने अपनी अक्ल कहां बेच खाई है, जो ऐसी चण्डूखाने की बेतुकी असम्भव बातों पर विश्वास करते हैं कि कलावती के गर्भाशय में से हवा निकल पड़ी और बजाय पंच तत्वों के केवल वायु से राधा नाम की औरत बन गई। इसलिये हम कहते हैं कि पुराण बनाने व उन पर ईमान लाने वाले दोनों अज्ञानी हैं और भङ्ग के नशे में रहते हैं। माधवाचार्य पृष्ठ १८ पर लिखता है कि राधा का कृष्ण से विवाह हुआ था और प्रष्ठ २२पर लिखता है कि राधासे कृष्ण का कभी विवाह या गौना नहीं हुआ। वह आजन्म ब्रह्मचारिणी

रही थी। दोनों में कौनसी बात ठीक है, यह वही जाने। कहीं लिखता है कि राधा प्रकृति को कहते हैं। पाठक राधा से कृष्ण के व्यभिचार की कथा नीचे पढ़ें और देखें कि राधा प्रकृति है या एक व्यभिचारिणी औरत है —

※ राधा से कृष्ण का व्यभिचार करना ※

एकदा कृष्ण सहितो नन्दो वृन्दावन ययौ।
एतस्मिन्नंतरे राधाजगाम कृष्ण सन्निधिम्॥
तमुवाच हरिस्तत्र स्मेराननं सरोरुहाम्।
आगच्छशयने साध्वि कुरुवक्षःस्थलेहिमाम्॥
तिष्ठत्यहं शयानस्त्वं कथामियत्क्षण गतम्।
वक्षस्थले च शिरसि देहि ते चरणाम्बुजम्॥
प्रणम्य श्रीहरिं भक्तया जगाम शयन हरेः।
कृष्ण चर्वित ताम्बूलं राधिकाये मुदाददौ॥
राधा चर्वित ताम्बूलं ययाचे मधुसूदनः।
करंधृत्वा च मां कृष्ण स्थापयामास वक्षसि॥
चकार शिथिलं वस्त्रं चुम्बनं च चतुर्विधम्।
वभूव रति युद्धेन विच्छिन्ना क्षुद्रघंटिका॥
चुम्बनेनौष्ठ रागाश्चं ह्याश्लेषेण च पत्रकम्।
पुलकोकित सर्वाङ्गी वभूव नव सङ्गमात्॥
मूर्छामवाप साराधावुबधे न दिवानिशम्।
प्रत्यंगेनैव प्रत्यंगमगेनांगं समाश्लिषत्॥
शृङ्गाराष्टविधं कृष्णश्चकार काम शास्त्रवत्।
पुनस्तां च समाश्लिष्यसस्मितांवक्रलोचनाम्॥
क्षतविक्षत सर्वाङ्गी नख दन्तैश्चकार ह।
वभूवशब्दस्तत्रैव शृङ्गार समरोद्भवः॥
निर्जने कौतुकात् कृष्णःकामशास्त्र विशारदः।

निवृते काम युद्धे च सस्मिता वक्रलोचना।
नित्यं नक्तं रतिं तत्र चकार हरिणा सह॥
(ब्रह्म वैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड अ १५)

अर्थ–एक दिन कृष्ण नन्द के साथ वृन्दावन गये। इतने में राधा कृष्ण के पास आगई। उस कमल मुख वाली को कृष्ण जी कहने लगे कि हे प्यारी पलङ्ग पर आजा, मुझे बगल में लेले। वह बोली मैं बैठी हूं आप लेटे हैं इस प्रकार व्यर्थ समय जारहा है। मेरी बगल और शिर में चरण अपर्ण करो। राधा कृष्ण को प्रणाम करके कृष्ण के पलंगपर गई। कृष्ण ने अपना चवाया हुआ पान राधा को दिया और राधा से चवाया हुआ पान कृष्ण ने मांगा। कृष्ण ने हाथ पकड़ कर राधा को बगल में ले लिया। उसके कपड़े ढीले कर दिये और चार प्रकार से चुम्बन किया। रति युद्ध में एक घंटा होगया। चूमने से राधा के होठों का रंग और लिपटने से करधनी नष्ट होगई। नये समागम से राधा रोमांचित होगई। वह राधा मूर्छित होगई। और दिन रात होश में नहीं आई। दोनों के अंग से अंग और प्रत्यंग से प्रत्यंग लिपट गया। काम शास्त्र के जानने वाले विशेषज्ञ कृष्ण ने आठ प्रकार से यूं भोग किया। फिर राधा से लिपटकर उस टेढ़ी नजर वाली मुस्कराती हुई को नाखूनों और दांतों से जख्मी कर दिया कामभोग युद्ध से बड़ा शब्द हुआ। काम युद्ध की समाप्ति पर वह तिरछी नजर वाली राधा मुस्कराने लगी।
वह राधा रात को हमेशा कृष्ण के साथ भोग किया करती थी।

यह है पुराणों का गन्दा कोकशास्त्र। राधा कृष्ण के बांये अंगसे पैदा हुई थी। राधा के साथ कृष्ण का व्यभिचार का संबंध था, यह बात ब्रह्म वैवर्त पुराण मानने वालों को बरबस माननी पड़ेगी। राधा एक औरत थी, कृष्ण उसे व्यभिचार के लिये पकड़

लाये थे। यह बात शिव पुराण के पीछे दिए गये प्रमाण से सिद्ध है। कृष्ण का गोपियों से व्यभिचार का सम्बन्ध था, यह बात विष्णु पुराण-भागवत व शिवपुराण से स्पष्ट हो चुकी है। पौराणिक पंथी पंडित भूमंडल भर में एक भी ऐसा नहीं है जो ऊपर के प्रमाणों का खंडन कर सके। रमण शब्द का अर्थ जहां हमने व्यभिचार (स्त्री प्रसंग) सिद्ध किया है, वह अकाट्य है हम अब एक प्रमाण और ऐसा देते हैं जिससे गोपियों के साथ कृष्ण का व्यभिचार के सम्बन्ध का कारण प्रकट हो जावेगा। पौराणिक पंडित अपने पुराणों की गंदी बातों के नमूने देखें और लज्जित हों।

पौराणिक कृष्ण की प्रेमिकायें गोपियां कौन थी ?

पुरामहर्षयः सर्वे दंडकारण्य वासिनः।
दृष्ट्वा रामं हरिं तत्र भोक्तु मिच्छत्सु विग्रहम। १६४॥
ते सर्वे स्त्रीत्वमापन्नाः समुद्भूतास्तु गोकुले।
हरिं सम्प्राप्य कामेन ततो मुक्त्वा भवार्णवात ।१६५।
(पद्मपुराण उत्तर खण्ड अ० २४५ कलकत्ता)

अर्थ-रामचन्द्र जी दण्डकारण्य बन में जब पहुंचे तो उनके सुन्दर स्वरूप को देखकर वहां के निवासी सारेही ऋषि मुनि उन से भोग करने की इच्छा करने लगे। उन सारे ऋषियों ने द्वापर के अंत में गोकुल की गोपियों के रूप में जन्म लिया और रामचन्द्र जी कृष्ण बने। तब उन गोपियों के साथ कृष्ण ने भोग किया। इससे उन गोपियों की मोक्ष होगई। वरना अन्य प्रकार से उनकी संसार रूपी भवसागर से मुक्ति भी न होती।

सनातनी लोग इसलिए कृष्ण को गोपीबल्लभ कहते हैं कि उन्होंने विषय भोग करके गोपियों (ग्वालिनों) को तार दिया।

यह है 'गोपीबल्लभ राधेश्याम' नाम से कीर्तन करने का रहस्य यदि आजकल कहीं यह पोराणिक कृष्ण आजावें तो विचारे इन कीर्तन पंथियों का भी किसी ऐसे ही मिलते जुलते नुस्खे से उद्धार होजाये। वरना दिन रात ये बेचारे 'राधेकृष्ण' रटने वाले कभी मुक्ति न पा सकेंगे। मुक्ति के नुस्खे भी पुराणों के बड़े मार्के के होते हैं, और यह अवतार का ही काम होता है कि उन का प्रयोग करके अपने भक्तों का कल्याण किया करें।

इसलिए हमारा यह लिखना कि 'राधा रति सुखो पेतो' 'राधा काम फल प्रदः' व 'राधालिंगन संमोहे'(गोपाल सहस्रनाम) का अर्थ कि कृष्ण राधा का आलिंगन करते थे उसे काम फल (विषयानन्द) या रति सुख प्रदान करते थे, सर्वथा सत्य है। रति शब्द का अर्थ इस प्रसंग में विषय भोग करना ही है, दूसरा नहीं झूंठे 'भद्रभाष्य' की शरण लेने से सत्य को दबाया नहीं जासक्ता है। क्योंकि पुराणों के अनुसार कृष्ण का राधा से नाजायज ताल्लुक था। पुराणों की यदि पिछली कथायें सत्य हैं तो कृष्ण के बारेमें पुराण का यह लिखना भी सर्वथा सत्य मानना पड़ेगा।

कि-साक्षाज्जारश्च गोपीनां दुष्ट परं लम्पटः।६१।
आगत्य मथुरा कुब्जां जघान मैथुनेन च।६२।
(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड उत्तरार्धे अ० ११५)

अर्थात्-कृष्ण गोपियों का जार (व्यभिचारी) दुष्ट, बड़ा लम्पट था। मथुरा में आकर उसने मैथुन करके कुब्जा को मार डाला।

क्रीड़ा, रति, रमण लम्पट व जार शब्दों का अर्थ व्यभिचार ही इन स्थलों पर होगा, यह हमारे ऊपर के लेख को देख कर सत्य सिद्ध हो जाता है। चाहे शूकर अवतार के यह चेले सनातनी पंडित कितना ही जोर क्यों न लगावें, पर इस सत्य को

काट नहीं सकते हैं कि पुराणों ने कृष्ण महाराज को धूर्त व्यभिचारी शिरोमणि माना है, जब कि गीता के श्री कृष्ण योगेश्वर महानात्मा व आदर्श चरित्रवान थे। पुराणों की राधा कृष्ण की गंदे अर्थों में प्रेमिका थी। यदि किसी के बाप दादे दुश्चरित्र भी हों तो भी लायक औलाद उनके चरित्र के धब्बों को छिपाती है। पर पौराणिक सनातन धर्म में निष्कलङ्क कृष्ण महाराज के साथ कल्पित राधा का नाम जोड़कर यह सङ्कीर्तनी कपूत औलाद ढोल मजीरे पीट पीट कर चिल्लाती है कि हमारे पुरखे (अवतार) दुराचारी थे उनकी एक रखेल (आशना) राधा थी वे गोपियों (पशु चराने वाली ग्वालिन छोकरियों) से व्यभिचार किया करते थे जब ये घर वाले ही अपने पूर्वजों को बदनाम करते हैं तो विधर्मी ईसाई मुसलमानादि उनको क्यों कर बदनाम नहीं करेंगे पुराणों में सारी की सारी ऐसी ही बेहूदी बातें भरी पड़ी हैं। राधा कृष्ण की बेटी है पुत्र वधू है और मामी है। और उसी राधा से कृष्ण का व्यभिचार चलता है। भगवान राम से ऋषि लोग भोग करने की इच्छा करते हैं, गोकुल में ऋषि गोपियां बनते हैं रामचन्द्र जी कृष्ण बनकर उनसे भोग करते हैं और भोग करने से वे गोपियां मुक्त हो जाती हैं। इसलिये कृष्ण को गोपीवल्लभ कहा गया है। कैसी धूर्तता की बातें बदमाशों ने गढ़ २ कर लिखी हैं। जिन्हें पढ़कर भी शर्म आती है। पर पौराणिक पंडित मंडल तथा उनका गुरू पाखंडी शिरोमणि पं० माधवाचार्य इन बातों को सही मानता है। और हमारे आक्षेपों को शब्दाडम्बर में उड़ाने की कोशिश करता है। यह पुराण प्रायः दो हजार वर्ष के इधर अंग्रेजों के आने तक बने हैं। ऐसा पुराणों में वर्णित इतिहास एवं उनकी भाषा शैली से स्पष्ट है। इन में भारी कमी बेशियां भी की गई हैं। भागवत के

महात्म्य प्रकरण में अ० १ श्लोक ३६ में लिखाहै—

आश्रमाः यवनैरुद्वस्तीर्थानि सरिस्तथा। देवता यतनान्यत्र दुष्टैर्नष्टानि भूरिशः अर्थात्—नारद कहते हैं कि कलियुग में यवनों ने भारत की नदियों तीर्थों व आश्रमों पर कब्जा कर लिया है व देव मंदिरों को नष्ट कर डाला है। इस श्लोक में आया यवन शब्द निश्चय पूर्वक मुसलमानी राज्यकाल का द्योतकहै। क्योंकि महाभारत के बाद ऐसी कोई यवन जाति मुसलमानों के अलावा नहीं हुई जिसने समस्त भारत के मंदिरों तीर्थों व आश्रमों पर अधिकार करके उन्हें नष्ट भ्रष्ट किया हो। यह केवल मुसलमानों ने किया था। अतः इस श्लोक से स्पष्ट है कि यह पुराण मुसलमानी राज्य भारत में कायम होने के बाद बना है। इसी प्रकार पद्म पुराण में तम्बाखू पीने का निषेध है।

धूम्रपानरतं विप्र दानं दद्याति यो नरः।
दातारो नरक यांति ब्राह्मणो ग्राम शूकरः॥ (पद्म पुराण)

अर्थ—तम्बाखू पीने वाले ब्राह्मण को दान देने वाला नरक में जाता है और वह ब्राह्मण मर कर गांव का सूअर बनता है। जहांगीर बादशाह ने 'तोजक' ग्रन्थ में लिखा है कि भारत में तम्बाखू-आलू-गोभी अमरीकन पादरी अकबर के राज्य में लाया था। तभी से इसका यहां प्रचार व पैदावार प्रारम्भ हुई। इस से पूर्व ये चीजें भारत में पैदा नहीं होती थीं। अतः तम्बाखू का निषेध होने से स्पष्ट है कि यह पुराण अकबर के बाद बना है। ये इतिहास के तथ्य हैं, अतः कोई भी इन्हें काट नहीं सकता है। बकवास भले ही करता रहे।

* पुराणों में अंग्रेजी *

रविवारे च संडे च फाल्गुने चैत्र फरवरी।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2879...(...34.
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

षष्टिश्च सिक्सटी ज्ञेया तदुदाहरण मीदृशम् ॥३७॥
(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खंड १ अ० ५)

अर्थात्—रविवार को संडे, फाल्गुण को फरवरी तथा षष्ठ को सिक्सटी अंग्रेजी में कहते हैं–इससे स्पष्ट है कि यह पुराण अंग्रेजों के बाद बना है।

भागवत में स्क० १२ अ० १३ श्लोक ६ में लिखा है।
'अष्टादश श्री भागवत मिष्यते'

अर्थात—भागवत में कुल १८००० श्लोक हैं। पर गिनने पर भागवत में केवल १४१८० श्लोक मिलते हैं। स्पष्ट है कि भागवत में से प्राय: ४००० श्लोक निकाल डाले गये हैं। अतः वर्तमान भागवत कटा छटा ग्रन्थ होने से अधूरा एवं अप्रमाणिक ग्रन्थ है। पुराणों के बारे में यह कहना कि व्यास ऋषि ने पुराणों को बनाया था, एक पागलपन की बात है। क्योंकि स्वयं पुराणों में लिखा है कि–

* पुराण धूर्तों ने बनाये हैं *

धूर्तैः पुराण चतुरैः हरि शङ्कराणाम्।
सेवा पराश्च विहितास्तव निर्मितानाम ॥ १२ ॥
(देवी भागवत् स्क० ५ अ० १६)

अर्थात्–पुराण बनाने वाले अनेक चतुर धूर्त लोगों ने शिव और विष्णु की पूजा की श्रेष्ठता अपने पेट भरने के लिये लिख मारी है इससे सिद्ध है कि पुराण बनाने वाले अनेक धूर्त लोग रहे हैं। किसी भी एक व्यक्ति ने पुराण नहीं बनाये हैं।

पुराण की गप्प–महाभारत के बाद रामचन्द्र हुये थे

भागवत पुराण में अवतारों की दो लिस्टें दी हैं जिनमें

यह बताया है कि कौन २ अवतार किस २ के बाद क्रमवार हुये हैं। दोनों ही लिस्टें एक दूसरे के सर्वथा विरुद्ध हैं। पहिली फ़हरिस्त भागवत स्क० १ अ० ३ में श्लोक ६ से २५ तक है, जिसमें कल्कि अवतार सहित कुल २२ अवतार होना मानाहै, इसमें एक विशेष बात यह मार्के की रही है कि रामचन्द्र को १८ वां अवतार माना है, और व्यास ऋषि को १७ वें नम्बर पर मानाहै अर्थात् रामचन्द्र जी महाभारत के व्यास ऋषि के भी बाद हुये थे। यह भागवतकार की चण्डूखाने की गप्प रही हैं। सनातनियों के कल्पित २४ अवतार भागवत नहीं मानता है।

दूसरी फ़हरिस्त भागवत स्कन्ध २ अध्याय ७ में दी हैं। उसमें कुल अवतार २१ माने हैं। इसमें नया अवतार हयग्रीव नाम का घुसेड़ दिया है और नारद व मोहनी नाम के पहली फहरिस्त के दो अवतारोंके नाम नाकाबिल गलत मानकर निकाल डाले गये हैं। इसके साथ दोनों लिस्टों में क्रम एक दम बदला हुआ हैं। इससे सिद्ध है कि अफीम की पिनक में भागवतकार ग्रन्थ बनाने बैठा था। उसे यह भी पता न रहा कि पीछे क्या लिख मारा है और आगे क्या लिखना है। सारे पुराण एक दूसरे के विरोधी हैं और गलत हैं। वास्तव में पुराण ग्रन्थ अति भ्रष्ट ग्रन्थ हैं। इन वेद विरुद्ध ग्रन्थों को मानने के कारण हिंदू जाति का बड़ा पतन हुआ है। इन्होंने औरों की बात छोड़ भी दी जाव कलियुगी माधवाचार्य आदि सनातनी पंडितों को साक्षात राक्षसों का अवतार बताया है। प्रमाण देवी भागवत ग्रन्थ स्क० ६ में पाठकों को मिलेगा।

लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य पृ० ५०१पर प्राचीन विष्णु पुराण का निम्न श्लोक लिखा है जिसे अब लोगों ने उस में से निकाल डाला है।

* कृष्ण २ रटने वाले पापी हैं *

अपहाय निजं कर्म कृष्ण कृष्णेति यो वादिनः ।
ते हरेर्द्वेषिणः पापाः धर्मार्थं जन्म यद् धरे ॥

अर्थात्–जो लोग वेदोक्त धर्म को त्याग कर केवल हरे 'कृष्ण' जपते रहते हैं वे कृष्ण के दुश्मन हैं, पापी हैं। क्योंकि कृष्ण का जन्म ही वेद धर्म के प्रचार के लिये हुआ था।

इस प्रमाण से वर्तमान कीर्तन प्रणाली गलत सिद्ध हो जाती है। जिसका पुराणों ने प्रचार करके हिंदू जाति में घोर पाखंड फैला रखा है। बहुत से अज्ञानी तो कृष्ण को भी छोड़ कर राधे राधे रटते हैं। मानो राधा सुंदरी से उनका कोई निकट का रिश्ता हो। धर्म के नाम पर इस कौम को इन पोपों ने किस कदर मूर्ख बना रखा है यह अकलमन्द लोग देखें, पुराणों ने एक ईश्वर के स्थान पर हजारों देवी देवताओं की पूजा हिंदू कौम में जारी करादी। परमात्मा के स्थान पर महादेव का लिंग (मूत्रेन्द्रिय) जनता से पुजवा डाला। विदेशी देवता विष्णु, शिव व गणेश का (जो कि सर्वथा कल्पित है) हिंदुओं को गुलाम बना डाला। पुराणों के अनुसार यह देवता पृथ्वी पर व्यभिचार करने या व्यभिचार में लगे शापों का दण्ड भुगतने को ही आते हैं। इनके गंदे चरित्रों का पुराणों में सविस्तार वर्णन है। अतः हमारा कहना है कि ईश्वर की प्रार्थना उपासना स्तुति छोड़कर जो लोग हरे कृष्ण या राधेकृष्ण जपते हैं, कृष्ण के नाम के साथ पुराणों की मान्यतानुसार दुराचारिणी राधा का नाम जोड़ते हैं वह पापी हैं, कृष्ण को बदनाम करते हैं। नाम जप के इच्छुकों को शुद्ध मन से 'ओ३म' व गायत्री का मानसिक जाप करना चाहिए। समस्त वेद एवं शास्त्रों में केवल 'ओ३म' के

जप ही का विधानहै। प्रणव का सार्थक स्मरण शांत चित्त होकर करने का योग दर्शन ने आदेश दिया है। कल्पित अवतार व विष्णु तथा शिव आदि के मंदिरों पर सर पटकने वाले अपना मनुष्य जन्म व्यर्थ खोते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित्र योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज हमारी आर्य जाति के निष्कलङ्क, ईश्वर भक्त महान पूर्वज थे। उनके नाम जप को छोड़कर उनके कार्यों एवं उनके जीवनादर्शों को अपने जीवनों में उतारना व्यक्ति समाज व देश के लिये उपयोगी होगा। सरकार २ रटने वाला पागल समझा जावेगा। राज्य भक्त नहीं, राज्य भक्त बनने के लिये 'सरकार' शब्द न रटकर राज्य के नियमों व आदेशों का मानना आवश्यक होगा। उनका पालन करने वाला वास्तव में राज्य भक्त कहा जावेगा। यही बात महापुरुषों के बारे में है। उनका आदर्श अपने जीवन में उतारना ही उनका भक्त होना है, न कि कोरा नाम रटना या रामायण का धूं आधार अखण्ड पाठ करते रहना। चाहे जीवन में एक भी आदर्श उनका पालन न किया जाता हो।

नारद ने भागवत में साफ साफ ऐलान कर दिया है कि ये माधवाचार्य जैसे कलियुगी सनातनी उपदेशक पंडित धर्म कर्म के बारे में खाक भी नहीं जानते हैं। अतः इनकी बात धर्म विषय में बिलकुल भी नहीं मानी जानी चाहिये। यह लोग जनता में झूंठे पांडित्य का कोरा ढोंग बनाये बैठे हैं।

सीता, राम, कृष्ण, रावण, कौरव, पांडव, लङ्का, अयोध्या आदि ऐतिहासिक व्यक्ति व स्थान हुये हैं। यदि कोई इनको (रामायण व महाभारत को) एतिहासिक न माने तो उसकी बात माननीय नहीं होगी। इसी प्रकार राधा रायण आदि का जन्म व शादी की बातें पुराणों में लिखी हैं। कोई माधवाचार्य जैसा

दीवाना हमारे आक्रमणसे घबड़ाकर इनकी आध्यात्मिक व्याख्या करने बैठे तो यह घोर पागलपन होगा। यह बात दूसरी है कि हमारे दृष्टिकोण से सम्पूर्ण पुराण व उनकी कथायें ही झूठी हैं। पागलों ने राधा नर्तकी की झूंठी कल्पना की उसे कृष्ण की प्रेमिका बनाया और पुराण बनाने वालों ने कृष्ण महाराज के परम पवित्र निष्कलङ्क जीवन पर गंदा कलङ्क लगाया है। इसी प्रकार सारे ऋषि मुनियों के आदर्श चरित्रों को पुराणों ने कलंकित किया है। इसलिये एक संस्कृत ग्रन्थकार ने लिखा है।

पौराणिक नाम व्यभिचार दोषो न शङ्कनीयः कृतिभिः कदाचित्।
पुराणकर्ता व्यभिचार जातः तस्यापि पुत्रो व्यभिचार जातः॥

(सुभाषित रत्न भण्डागार)

अर्थात्-पौराणिकों में व्यभिचार का दोष बहुत होता है। इसमें कतई शंका न करना चाहिए। पुराण बनाने वाला व्यभिचार से पैदा हुआ था, उसकी औलाद भी व्यभिचार से हुई थी।

अतः वे सनातनी पंडित महान दोषी हैं जो इन पुराणों के दूषित साहित्य को पढ़ २ कर जनता को सुनाते हैं। गीता प्रेस जैसी पुराण प्रकाशक व्यौपारी संस्थायें भी धर्म भक्त हिंदू कौम में पुराणों का घासलेटी साहित्य छाप २ कर बेचने से जनता को पथ भ्रष्ट करने के दोष से मुक्त नहीं की जा सकती हैं। पुराणों की गंदी कथाओं की आध्यात्मिक व्यवस्थायें ढूंढना विष्टा के ऊपर सोने का वर्क लगाने के समान है जिसकी बदबू दबाने से नहीं दब सकती है। जब आर्य समाजी खण्डन मण्डन का तर्क पूर्ण द्विधारा चलने लगा तो अब घबड़ाकर पोप लोग पुराणों के व्यभिचार की कथाओं को छिपाने के लिये उल्टे सीधे आध्यात्मिक अर्थ ढूंढने बैठे हैं। उसमें भी फेल हुए हैं।

* क्या वेद में राधा का वर्णन है *

बिल्ली को ख्वाब में छिछड़े ही नज़र आते हैं। इस लोकोक्ति के अनुसार—

१—पौराणिक पंडितों को वेद में राधाकृष्ण, राम, रावण का वर्णन दीख पड़ता है।

२—मुसलमान को वेद में 'शतमदीनः' पद में मक्का मदीना दीखता है।

३—ईसाई को वेद में 'ईशा वास्यमिदं' में ईसा मसीह नजर आते हैं।

४—कबीर पंथी को वेद में 'कविर्मनीषी' पद में कबीरदास जी दीखते हैं।

५—एक लालाजी को वेद में 'श्रीश्चते लक्ष्मीश्चते' में अपनी पत्नी 'लक्ष्मीदेवी' का वर्णन मिलता है।

६—पादरी साहब को रामायण में गिरिजा पूजन देखकर सीता जी की गिरजे में मसीह की पूजा नजर आती है।

७—एक मुल्ला को वेद में 'इमामतमिद्र' पद में दिल्ली की मस्जिद का इमाम मिल जाता है।

८—'चेरि छोड़ि होव किरानो' रामायण में 'किरानो' ईसाईयत का सबूत प्रत्यक्ष दीखता हैं।

९—मांसाहारी को वेद में 'मुरगायमद्य यूयं' में मुरगा और शराब नजर आता है।

१०—जैनी को वेद में 'स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः' पद में तीर्थंकर नेमिनाथ दीखते हैं।

११—रावणवंशी पंडितों को 'पाहिधूर्तेररावणः' में धूर्त रावण नज़र आता है।

१२ तो पाखण्डी शिरोमणि माधवाचार्यको वेद के 'इन्द्र वयमनु-राधं हवामहे' मंत्र भाग में कृष्ण घुसेड़ कर राधा के स्वप्न नजर आतेहैं। जैसे सिनेमा प्रेमी नौजवान को स्वप्न में गायका सुरैया सुन्दरी नजर आती है।

हिंदुओं के घर में ही जब वेदों के दुश्मन पौराणिक पंडित मौजूद होवें और वे जान बूझकर धूर्तता करें तो वेदों के अपौ-रुषेयत्व की रक्षा क्या मुसलमान करने आवेंगे ? सनातनी जनता के लिये कलङ्क की बात है कि ऐसे नास्तिक पंडितों की वह कद्र करती है, जिनकी शक्ल देखना भी उसे पाप समझना चाहिये।

वेदों के हजारों मंत्रों में लाखों शब्दों का प्रयोग हुआ है जिन का अर्थ व्याकरण की रीति से निरुक्तादि की शैली से किया जाता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान के भण्डार एवं आदि सृष्टि में मनुष्यों को मिलने से उनमें व्यक्ति इतिहास या किसी भी स्थान का वर्णन नहीं हैं। पर दीवाने लोगों को यदि किसी नाम का शब्द वेद के किसी पद से मिलता जुलता भी दीखने लगता है, तो वह बकने लगता है कि वेद में अमुक व्यक्ति का वर्णन आया है। ईसाई, इमाम, कबीर, राधा, लक्ष्मी, रावण, राम, मदीना आदि नाम वेदों में इसी प्रकार अंधे लोग ढूंढा करते हैं।

* वेदों में राधा-कृष्ण का विपक्षी प्रमाण *

'इन्द्रं वयमनुराधं हवामहे' (अथर्व वेद १६/१५/२) इसमें अनुराधम् पदमें इस अंधे को राधा दीख पड़ी हैं। सत्यार्थ यहहै

(वयम्) हम लोग (आराधं) आराधना करने योग्य या सिद्ध कराने हारे (इन्द्रम्) ऐश्वर्यशाली परमेश्वर की (हवामहे) स्तुति करते हैं।

वेद मंत्रों में राधा या कृष्ण की गंध भी नहीं है पर फिर भी इन सनातनी पाखंडी पंडितों को वेद में राधा कृष्ण नजर आ रहे हैं।

इस प्रकार हमने दिखाया कि श्रीकृष्णजी महाराज को पुराणों ने कल्पित कथाओं द्वारा हर प्रकार से बदनाम करने का प्रयास किया है। राधा से नाजायज सम्बंध, कुब्जा से व्यभिचार गोपियों से विषय भोग एवं काम क्रीड़ा करना आदि झूठी लज्जा जनक बातें हैं। कीर्तन प्रणाली जिसका कि सनातनियों में काफी प्रचार हो रहा है। भगवान कृष्ण को बदनाम करने की दृष्टि से अत्यधिक मूर्खता पूर्ण चीज है।

हमारे पिछले लेख से स्पष्ट हो चुका है कि राधा रमण श्री गोविंद जै २ का अर्थ राधा से व्यभिचार करने वाले कृष्ण की जै होगा। राधे कृष्ण का अर्थ होगा राधा कृष्ण के नाजायज ताल्लुक का ढोल पीटना। माधवाचार्य ने राम का अर्थ 'विषया-नन्दी' कियाहै। तो हरे रामा हरे कृष्णा का अर्थ होगा,हे विषया नन्दी कृष्ण। गोपी बल्लभ राधेश्याम का अर्थ होगा, गोपियों (ग्वालिनों) से विषय भोग, व्यभिचार करने वाले व राधा के नाजायज प्रेमी कृष्ण। इस प्रकार वर्तमान सम्पूर्ण कीर्तन का अर्थ होगा-गोपियों से व राधा से व्यभिचार करने वाले विषया-नंदी कृष्ण की जै हो। यह कीर्तन हुआ,या अपने पुरखा श्रीकृष्ण जी को पानी पीकर ढोल मजीरे बजाकर मजमा लगाकर गालियां देना हुआ। इन सनातनियों की कैसी अक्ल मारी गई है कि वह पुराणों की शराब के नशे में निष्कलङ्क भगवान कृष्ण को दिन रात चीख २ कर गालियां दिया करते हैं। व्यभिचार को ये अज्ञानी ब्रह्मचर्य मानते हैं। पुराणों की व्यभिचारिणी राधा को

ये आजन्म ब्रह्मचारिणी बताते हैं, कृष्ण के कुब्जा से खुले व्यभिचार को यह उसकी डाक्टरी करके कमर सीधी करने का इलाज मानते हैं, गोपियों से हरामखोरी (विषय भोग) करने, को पवित्र प्रेम का प्रतीक मानते हैं, जमुना में स्नान करती हुई गोपियों के वस्त्र चुराने व उनके गुप्तांगों के नग्न दर्शन करने, उनसे छल व मजाक करने को यह उनको पवित्र उपदेश देना बताते हैं। संसार के सारे दुराचारों की जड़ इस सनातन धर्म में मिट्टी का तेल डालकर आग लगा देना चाहिये। इन घासलेटी पुराणों को किसी नदी या पोखर में जल प्रवाह कर देना चाहिए राम कृष्ण जैसे आर्य जाति के हमारे महा पुरुषों को कलङ्कित करने वाले, उनको गालियां देने वाले इन कीर्तन पंथियों को तर्क शास्त्र का सम्बल लेकर ठीक करना चाहिए और जोर देकर उनको मजबूर करना चाहिए कि कृष्ण को बदनाम करने से बाज आयें उनकी इन हरकतसे हिंदू जाति का घोर अपमान हुआ है। ऐसे पाखण्डी सनातनी पोप पंडितों की शक्ल देखना भी पाप समझना चाहिए जो पुराणों का व कीर्तन का प्रचार करके भोली हिंदू जाति में अधर्म का प्रचार करते हैं यह हमारा सभी समझदार पाठकों से निवेदन है, क्योंकि जबतक इन धर्म के ठेकेदार उपदेशकों की अक्ल दुरुस्त नहीं की जावेगी यह जनताको ग़लत मार्ग पर डालने से बाज नहीं आवेंगे। इसलिए आर्य समाजियों व समझदार पौराणिक बंधुओं को जनता में से इन धार्मिक दोषों के निवारण का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

मुद्रक—नाथूराम गुप्ता, गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस हाथरस।

श्री डा० श्रीराम आर्य—कृत

'खंडन मंडन ग्रन्थ माला की क्रांतिकारी
—पुस्तकों की सूची—

गीता विवेचन (गीता खंडन)	मूल्य	१' ७५ न०पै
अवतार रहस्य (अवतार वाद का पोलखाता)	,,	१' ५० ,,
शिवलिङ्ग पूजा क्यों ? (मूत्रेन्द्रिय पूजा का भण्डा फोड़)	,,	१' १२ ,,
शिवजी के चार विलक्षण बेटे	,,	३७
पुराणों के कृष्ण	,,	३१ ,,
मृतक श्राद्ध खण्डन	,,	३१ ,,
पौराणिक मुख चपेटिका	,,	१६ ,,
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	,,	२५ ,,
नृसिंह अवतार वध	,,	१२ ,,
अवतार वाद पर ३१ प्रश्न	,,	१० ,,
शिवलिङ्ग पूजा रहस्य (सरकार द्वारा जब्त अप्राप्य)		
शास्त्रार्थ के चेलेञ्ज का उत्तर	मू०	२५ ,,
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	,,	७५ ,,
माधवाचार्य को डबल उत्तर	,,	६५ ,,
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न	,,	१२ ,,
पुराण किसने बनाये ?	,,	७५ ,,
पौराणिक गप्प दीपिका	,,	५५
मुनि समाज मुख मर्दन	,,	१' ५०
हिंदू सङ्गठन का मूल मंत्र	,,	६

नोट—कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित होरहे हैं। धार्मिक पाखण्डों के खण्डन एवं वैदिक धर्म के प्रचार लिए इन पुस्तकों को भारी संख्या में मँगाकर प्रचार क

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2879
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

व्यवस्थापक—
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगञ्ज (उ०प्र०) भारतवर्ष